अमर शहीद जगदेव बाबू

2.02.1922 - 5.09.1974

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : दयाराम (शोधकर्ता)
सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक 05.09. 2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 73551 75480

बंधुओं :

हमें हत्या मंजूर है, बेटियों के साथ बलात्कार मंजूर हैं, लेकिन बहुजनों में आपस में अंतरजातिय विवाह मंजूर नहीं हैं। हम बौद्ध धम्म अपना लेंगे, विपश्यी बन जाएंगे, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी बन के बड़े-बड़े भाषण देंगे, बड़े बड़े दानदाता भी बन जायेंगे। अंतरवर्णीय विवाह करके आरक्षणी दौलत और पुरखों की रियासत-विरासत सब सवर्णों को सौंप देंगे। लेकिन बहुजन अंतरजातिय विवाह मंजूर नहीं है। हमारी मुख्य समस्या अमीरी-गरीबी नहीं, जातीय भेदभाव हैं। और सभी सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक.. समस्याओं का सिर्फ एक ही इलाज है, बहुजन अंतरजातिय विवाह। समय रहते चेत जाओ।

जगदेव प्रसाद : यदि आपके परिवार में अपने बेटे की मृत्यु हो गई है, और उसी समय आसपास के क्षेत्र में ब्राह्मणवाद के विनाश पर विचार-विमर्श चल रहा है। तो पहले आपको विचार-विमर्श में शामिल होना चाहिए, और बाद में मृत शरीर के अंतिम संस्कार में। अन्यथा ब्राह्मणवाद आपके करोड़ों बच्चों को दफन कर देगा।

जिस प्रकार शेर और बकरी एक घाट पर पानी नहीं पी सकते और न ही एक साथ रह सकते हैं। उसी प्रकार शोषित और शोषक एक साथ रहकर देश को नहीं चला सकते। 7 अगस्त 1972 की घोषणा -

दस का शासन नब्बे पर, नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।
सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग हमारा है।।

दयाराम(शोधकर्ता) : मेरे पिता ने सहकारी इंटर कॉलेज मेहरावां, जौनपुर, (उ.प्र.) में सन् 1966 में कक्षा 6 में प्रवेश प्रवेश दिलाया। यह स्कूल क्षत्रियों का था और इस कॉलेज में पिछड़े वर्ग के एकमात्र शिक्षक थे, माननीय रामजीत यादव, जो रसायन विज्ञान के प्रवक्ता थे। उनसे मेरी मुलाकात हुई और उन्हीं के माध्यम से मेरी मुलाकात माननीय रामस्वरूप वर्मा, चौधरी महाराज सिंह भारती, जयपाल सिंह कश्यप, डॉक्टर बी.आर. कुरील, नंद किशोर सिंह, प्रोफेसर जयराम प्रसाद सिंह तथा लक्ष्मण चौधरी आदि, सभी लोगों से हुई। इन्हीं महान विभूतियों के विचार सुनने के लिए मैं माननीय रामजीत यादव के साथ बिहार और उत्तर प्रदेश में जगह-जगह जाता। सन् 1970 के दशक में, मेरे गृह जनपद जौनपुर के खेता सराय बाजार में, निराले शाह के हाते में अर्जक संघ और शोषित समाज दल का 2 दिन का राज्य स्तरीय सम्मेलन संपन्न हुआ। जहां माननीय रामस्वरूप वर्मा, जयपाल सिंह कश्यप, चौधरी महाराज सिंह भारती के अतिरिक्त, बिहार से बाबू जगदेव प्रसाद कुशवाहा जी पधारे। मैं ठहरा अछूत बालक। और सारे के सारे नेता सछूत। मैंने बाबू जगदेव प्रसाद से अभिवादन में कहा "जय अर्जक"। इतना सुनते ही बाबू जगदेव प्रसाद ने मुझे गले से ही नहीं लगाया, बल्कि ऊपर उठा लिया। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। जातिवाद के जकड़न से सिकुड़ा हुआ मेरा सीना चौड़ा होना शुरू हो गया। मैं सभी के साथ जुलूस में सड़क पर चल रहा था, और नारे लगा रहा था :

दस का शासन नब्बे पर, नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।
सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग हमारा है।।

सन 1835 में लॉर्ड मैकाले ने शिक्षा के क्षेत्र में भारत के सभी नागरिकों के लिए समान शिक्षा प्रणाली का अध्यादेश जारी किया। पूरे देश में उतर पुथल मच गई। मुस्लिम आक्रांता भारत में 750 वर्ष तक इसलिए शासन करने में सफल रहे, क्योंकि उन्होंने आर्य ब्राह्मणों के धर्मादेशों पर उंगली नहीं उठाई। अंग्रेजों ने ज्योंही अमानवीय ब्राह्मणी संस्कृति को नकारना शुरू किया। और ब्राह्मणों ने अंग्रेजों को भगाने के लिए कमर कसना शुरू कर दिया।

राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले, बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर, छत्रपति शाहूजी महाराज, पेरियार रामास्वामी नायकर, अछूतानंद, गाडगेबाबा आदि, बेधड़क होकर अपने सामाजिक आंदोलन को गतिमान बना सके, तो उसका मूल कारण था, ब्रिटिश हुकूमत का डण्डा। इतिहास साक्षी है कि मुगलकाल में ब्राह्मण राजनीतिक सत्ता में प्रवेश कर गये। यहां तक कि, आवश्यकता पड़ने पर अपनी बहन बेटियों को मुगलों से ब्याह कर, अपने बड़े से बड़े अपराध से निजात पा गये। वैसे ही अब संपन्न बहुजनों के साथ रिश्ते हो रहे हैं। जगदेव बाबू का जन्म ऐसे समय हुआ, जब बहुजनों को शासन सत्ता से विमुख करने के लिए द्विजातियों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। क्योंकि ब्रिटिश हुकूमत ने 1917 में घोषणा कर दी थी, कि शीघ्र ही वे भारत को आजाद कर देंगे।

सन 1956 में बाबू जगदेव प्रसाद बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर से मिले, और उन्होंने मूलनिवासी बहुजनों की सामाजिक, आर्थिक दुर्दशा पर बातचीत की। तथा राजनैतिक आंदोलन में दोस्त और दुश्मन की पहचान पर भी चर्चा की। बहुजनों का आंदोलन कैसे आगे बढ़े, इस पर 1 घंटे तक वार्तालाप किया और बाबासाहेब से मार्गदर्शन प्राप्त किया। जैसे भट्टी से निकला हुआ लोहा ठंडा होने पर वज्र का रूप धारण कर लेता है। उसी प्रकार डॉक्टर अंबेडकर से मिलने के बाद जगदेव बाबू ने शोषित क्रांति के आंदोलन में वज्र का रूप धारण कर लिया और नारा दिया :

बाबासाहेब का सपना ही, जगदेव तुम्हारा नारा है।
सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग हमारा है।।

बाबासाहेब की तरह ही परिवार ने जगदेव बाबू को प्यार अवश्य दिया। किंतु शैशवकाल में ही उन्हें समाज से लेकर स्कूल तक, प्यार के स्थान पर दुत्कार मिली। जिसके कारण उनके अंदर विद्रोह की ज्वाला धधक उठी। उन्होंने तय किया, कि स्वाभिमान और स्वावलंबन की थोड़े दिनों की जिंदगी, गुलामी की लंबी जिंदगी से ज्यादा अच्छी है। उनका संदेश था :

एक लम्हा भी मुस्सर्रत का बहुत होता है।
लोग जीने का सलीका ही कहां रखते हैं।।

बिहार राज्य के जहानाबाद जिले के कुर्था प्रखंड के निकट कुरहारी ग्राम के इंद्रजीत महतो को, गांव एवं क्षेत्र के लोग एक चर्चित पहलवान के रूप में जानते थे। इंद्रजीत महतो के दो

पुत्र थे, प्रयाग नारायण और राम किशुन प्रसाद। प्रयाग नारायण बड़े थे। जातीय भेदभाव के वातावरण में इंद्रजीत महतो ने प्रयाग नारायण को मिडिल पास करवाया। एक पिछड़ी जाति के बालक के लिए उस जमाने में मिडिल पास करना एक बहुत बड़ी बात थी। प्रयाग नारायण को मिडिल की शिक्षा पूरी करने के बाद ही प्राइमरी पाठशाला में नौकरी भी मिल गई। शिक्षा के दौरान उनकी शादी राजकली देवी के साथ हो गई। घर, खेती-बाड़ी का कार्य छोटे भाई राम किशुन प्रसाद देखते थे। 2 फरवरी 1922 को प्रयाग बाबू के घर में एक बच्चे ने जन्म लिया, शिशु का नाम जगदेव रखा। जिस प्रकार प्रयाग बाबू दो भाई थे, उसी प्रकार जगदेव बाबू भी दो भाई थे, छोटे भाई का नाम वीरेंद्र प्रसाद। जगदेव बाबू की दो बहने थी, राजेश्वरी देवी और सत्यमूर्ति नायिका। प्रयाग बाबू के पास खेती के लिए मात्र साढ़े तीन बीघे जमीन थी। शिक्षक पिता प्रयाग नारायण के निर्देशन में बालक जगदेव की शिक्षा शुरू हुई। जगदेव ने शकूराबाद से मिडिल परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। सांवला रंग, गठीला बदन, उन्नत ललाट, चौड़ी छाती, शरीर से मजबूत स्वभाव से चंचल जगदेव के विषय में कौन जानता था, कि इस बालक के रोम रोम में अन्याय के विरुद्ध चिंगारी भरी है। बालक जगदेव के अंदर निडरता और साहस के गुण उनके दादा इंद्रजीत महतो से मिले। जगदेव खेलकूद में जब जब अब्बल आते थे, तो उनके दादा इंद्रजीत महतो उन्हें बाजार ले जाकर जलेबी खिलाते और घर लौटने पर अपने पौत्र की प्रशंसा कर मनोबल बढ़ाते।

बालक जगदेव जब कक्षा 5 में पढ़ रहा था, उसी समय उसने सायं को एक मजदूर को देखा। जो गांव में उसका दादा लगता था। उसे जमीन पर तड़पते हुए देखा, पूछने पर उसने बताया कि 'मालिक दिनभर उससे काम लेता है, और खाने के लिए दो बासी रोटी भेज देता है। एक तो बूढ़ा शरीर, दूसरा तपती धूप में काम, शरीर में जान नहीं, भूख के मारे बैठा नहीं जा रहा है। चटाई तक पहुंचने की हिम्मत तक नहीं बेटा।' इतना सुनना था कि, बालक जगदेव का विद्रोही मन आग बबूला हो उठा। बालक जगदेव के मन में यही से विद्रोह की चिंगारी भड़क उठी। कक्षा सात की परीक्षाभी बालक जगदेव ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। पिता प्रयाग नारायण ने जगदेव के लिए नया कुर्ता, नई धोती, पहनाकर बाजार भेजा। बाजार से लौटते समय जगदेव की मुलाकात जमीदार के मुंशी से हो गई। बालक जगदेव का कुर्ता धोती देखकर जमीदार का मुंशी जल भुन गया। उसके दिलो-दिमाग में तो मनु का धर्मादेश पैठ बना रखा था। कि शूद्रों को खाने में झूठा अन्य, पहनने के लिए फटा पुराना वस्त्र, खाने के लिए मिट्टी के टूटे बर्तन और सोने के लिए घास फूस होना चाहिए। जमीदार का मुंशी बालक जगदेव को रोककर कहा :

'प्रयगवा के लड़कवा का देख, इतौ बड़ा लाट साहब बन गईल बा।'

इतना सुनना था कि बालक जगदेव ने करारा जवाब देते हुए कहा, तुम्हारे बाप का खर्चा लगा है क्या? बालक जगदेव जमीन से धूल उठाया उसके मुंह पर फेंक कर भाग गया। मुंशी ने अपने पास के लोगों को बालक जगदेव को पकड़ने के लिए दौड़ाया। लेकिन इतने में बालक जगदेव अपने घर पहुंच दादा की गोद में विराजमान हो चुका था।

जगदेव प्रसाद के अंतर्मन में सामाजिक विषमता के प्रति बढ़ते आक्रोश की यह प्रथम चिंगारी थी। जिसने आगे चलकर ज्वाला का रूप धारण करना शुरू किया। बालक जगदेव ने अपने बचपन में देखा, कि कैसे जमीदार पंचकठवा अर्थात किसानों की जमीन की फसल का 5 कट्ठा हाथियों को चरा देने का नियम बना रखा था। गरीब किसान मन से लाचार था। किंतु जमीदारों के जुल्मी आतंक के कारण फसल चराने के लिए मजबूर थे। जगदेव प्रसाद ने गांव के लड़कों से मिलकर इसका विरोध किया। जब जमीदार का पीलवान हाथी लेकर फसल चराने आया, तो इन लड़कों ने पहले तो मना किया, बाद में मारपीट कर भगा दिया। साथ ही चेतावनी भी दे दी, कि फिर अगर इधर दिखाई दिए, तो बहुत मार खाओगे। स्वभाव से निर्भीक और जिद्दी बहादुर लड़कों के सामने जमीदार को हवा का रुख भांपकर चुप रह जाना पड़ा। यह जगदेव प्रसाद के जीवन की दूसरी विद्रोही घटना थी।

द्विजातियों के विचार और व्यवहार ब्राह्मण धर्म शास्त्रों की धाराओं से निर्मित हुए थे। इसलिए वे अछूत और पिछड़े वर्ग के बालकों को फूटी आंख भी नहीं देखना चाहते थे। ऊंची जाति का एक शिक्षक जगदेव प्रसाद की निर्भीकता और स्पष्ट वादिता से हमेशा अप्रसन्न रहता था। एक दिन कुढ़ते हुए बिना किसी गलती के शिक्षक ने जगदेव प्रसाद को एक तमाचा जड़ दिया। जगदेव प्रसाद तिलमिला उठे, अकारण पीटे जाने के कारण उनके दिलो-दिमाग पर गहरी चोट चोट पहुंची। जगदेव प्रसाद का तिरस्कृत मन अवसर की तलाश में था, कि कभी यह शिक्षक कोई ऐसी गलती करें, जिससे वे उसे सबक सिखाएं। एक दिन वही शिक्षक पढ़ाते पढ़ाते कुर्सी पर सो गया, जगदेव प्रसाद ने खराटे भर्ते शिक्षक को बदले में एक जोरदार तमाचा जड़ दिया। शिक्षक द्वारा शिकायत करने और प्रधान अध्यापक द्वारा बुलाए जाने पर, जगदेव उन्हें स्पष्ट उत्तर दिया, गलती करने वाले सभी को समान सजा मिलनी चाहिए। मुंहतोड़ और सटीक जवाब सुनकर तथा जगदेव प्रसाद के नौजवान लड़कों की टोली की भय से प्रधानाध्यापक की बोलती बंद हो गई।

चंचल बालक की प्रतिभा और साहस के कारण प्रयाग बाबू, जगदेव प्रसाद को आगे पढ़ाना चाहते थे। किंतु परिवार बड़ा होने के कारण आगे की शिक्षा के लिए हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। प्रयाग नारायण ने अपनी तंगी की हालत अपने चाचा के मित्र यदुनंदन प्रसाद को बताई। यदुनंदन प्रसाद खाद मैनेजर, किंतु स्वभाव से बहुत अच्छी थे। उन्होंने जगदेव प्रसाद को अपने पास बुला कर कुछ प्रश्न पूछे, जगदेव प्रसाद से संतोषजनक उत्तर सुनकर इतना प्रसन्न हुए, कि आगे की शिक्षा की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली। और प्रयाग नारायण ने जगदेव प्रसाद का नाम बीडी हाई स्कूल जहानाबाद में करा दिया। जगदेव प्रसाद ने स्वयं खाना बनाना शुरू किया, ताकि पढ़ाई में घर से कम आर्थिक मदद लेनी पड़े। इसलिए जगदेव प्रसाद बच्चों का ट्यूशन भी करने लगे।

इनकी एक मित्र मंडली भी थी, जिसमें कई लोगों के साथ भोला प्रसाद सिंह और चंद्रदीप प्रसाद मुख्य थे। जो इनके दाएं और बाएं बाजू की तरह इनके साथ हर जगह खड़े मिलते थे। एक बार जमीदारों ने जहानाबाद में एक बहुत बड़ी सभा आयोजित की। जिसमें किसान सभा एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता स्वामी सहजानंद भी पधारे थे। मूलनिवासी बहुजन समाज के नेतागण इस बात पर जोर दे रहे थे, कि जमीदारी प्रथा का खात्मा डॉक्टर अंबेडकर ही कर सकते हैं। द्विजातियों के दिमाग में यह बात घर कर गई थी, कि अगर इन पिछड़ी जातियों का दिमाग इस समय खराब हो रहा है, इसका कारण है कि इनके दिमाग में अंबेडकर बैठ गया है। द्विजातियों की तरफ से एक नेता ने बड़े आक्रोश भरे शब्दों में घोषणा की,

करोड़ों अंबेडकर के जन्म लेने पर भी जमीदारी प्रथा का अंत नहीं हो पाएगा।

इतना सुनना था, कि भीड़ में से एक नौजवान निकलकर ऊंची आवाज में इसका प्रतिकार किया, और तेज आवाज में उद्घोष किया :

जमीदारी प्रथा का नाश हो।
डॉक्टर अंबेडकर जिंदाबाद।।

वह नौजवान और कोई नहीं जगदेव प्रसाद थे। जिनके साथ भोला प्रसाद सिंह, चंद्रदीप प्रसाद आदि दर्जनों नौजवान, हाथों में काला झंडा लेकर सभा का विरोध कर रहे थे। इस पर

पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें जगदेव प्रसाद तथा उनके कई साथी बुरी तरह घायल हो घायल हुए।

इसी बीच प्रयाग बाबू के पास जगदेव की शादी के लिए लड़की वाले आने आने लगे थे और अंततः दादा इंद्रजीत माहतो, मां राजकली और पिता प्रयाग नारायण, चाचा राम किशुन प्रसाद ने बैठकर रिश्ता तय कर दिया और जगदेव प्रसाद का विवाह सतरंजना देवी के साथ हो गया। जिनसे तीन पुत्रः विद्युत प्रकाश सेनापति, नागमणि, जयदीप कुमार और दो पुत्रियां शैल कुमारी तथा मधु कुमारी ने जन्म लिया।

जगदेव प्रसाद ने 1944 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की।

इसी समय पिता प्रयाग बाबू की तबीयत अचानक खराब हो गई और बहुत इलाज करवाने के बाद भी प्रयाग बाबू को नहीं बचाया जा सका। यहीं से जगदेव बाबू का आस्तिक मन, नास्तिक हो गया। निर्दोष पिता की अकाल मृत्यु ने ईश्वर की सत्ता से विमुख कर दिया। माता-पिता और दादा-दादी के आराध्य देवी-देवताओं के ऊपर जगदेव बाबू का गुस्सा फूटा, और उन्होंने उन देवी देवताओं को उठाकर पिता की अर्थी के ऊपर डाल दिया। दादा इंद्रजीत महतो की भावनाओं को बदलने के लिए जगदेव बाबू ने उनके सामने हाथ जोड़ते हुए ब्राह्मणी कर्मकांड करने से मना कर दिया। पुनर्जन्म और भाग्य कोई चीज नहीं। यह पाखंडिओं द्वारा लिखित कोरी कल्पना है। इस पर दादा इंद्रजीत महतो ने अपने पौत्र जगदेव के विविधतापूर्ण तर्क और उनके आग्रहपूर्वक हट को मान लिया। पिता की मृत्यु के बाद घर में मां, पत्नी, बच्चे, दोनों बहनों, आदि सभी का भरण पोषण और छोटे भाई वीरेंद्र बाबू की पढ़ाई की समस्या थी। लेकिन मां ने जगदेव बाबू को से कहा, कि चाहे जैसे भी पढ़ो, मैं तुम्हें अवश्य पाढ़ाऊंगी। मां राजकली देवी से ₹11 लेकर जगदेव प्रसाद पटना के गांधी मैदान में उदास बैठे थे। संयोग से गांधी मैदान में ही कालेज के एक माली से उनकी भेंट हुई, उस माली के प्रयास से जगदेव बाबू का नामांकन हो गया। उस माली ने जगदेव बाबू की आर्थिक दशा के को देखते हुए प्राचार्य से अनुनय विनय कर उनकी फीस भी माफ करवा दी। इधर घर की भी उन्हें चिंता सता रही थी, इसलिए उन्होंने ट्यूशन पढ़ाकर अपने खर्च के साथ-साथ, घर के लिए भी कुछ पैसे भेजने शुरू कर दिए।

एक बार एक संपन्न किसान ने जगदेव बाबू की मजबूरी को भांपते हुए अपनी सुंदर और शिक्षित पुत्री की शादी उनसे करने के लिए प्रस्ताव रखा। क्योंकि जगदेव बाबू शादीशुदा थे,

इसलिए उन्हें क्रोध आ गया। लेकिन अपने क्रोध को दबाकर कहा, कि यह नैतिक मूल्यों के बिल्कुल प्रतिकूल है। एक पुरुष को केवल एक ही पत्नी रखनी चाहिए। क्योंकि उन्होंने देखा था, की हमारी भाभी कटी-फटी साड़ी और उसमें भी कई कई पैबंद लगे हैं, उसको पहन कर गुजारा करती हैं। इस प्रकार आर्थिक और सामाजिक विषमता को झेलते हुए जगदेव प्रसाद ने 1948 में स्नातक तथा 1950 में पटना विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए की डिग्री हासिल की।

एक बार पार्टी प्रचार अभियान से जगदेव बाबू पटना से लौट रहे थे, रास्ते में एक गरीब रिक्शेवाले पर पुलिसिया अत्याचार की सूचना मिली, उन्होंने अपने संगठन के सक्रिय कार्यकर्ता परमानंद को साथ लिया और थाना पहुंचे। छोटे दरोगा से बहस शुरू हो गई, इतने में बड़े साहब आ गए और जगदेव बाबू से हाथ मिलाते हुए बोले, जगदेव बाबू याद है हम दोनों पटना विश्वविद्यालय में साथ साथ पढ़ते थे। बड़े साहब ने छोटे साहब को खूब फटकारा। और फिर दरोगा को सबक सिखाने के लिए वे जगदेव बाबू के साथ चल पड़े। रास्ते में बड़े साहब ने जगदेव बाबू से कहा आप ₹100 की यह दो नोट किसी व्यक्ति से रिक्शा वाले के पास भेज दीजिए। इसका नंबर मैं अपनी डायरी में नोट कर लेता हूं। हम लोग थाने के आसपास सादी वर्दी में रहेंगे। जब रिक्शावाला यह ₹200 दरोगा को देगा, तो अपना गमछा हवा में लहरा कर संकेत करेगा। वैसा ही किया गया और दरोगा घूस लेते रंगे हाथ पकड़ा गया। और जेल भेज दिया गया। यह थी बहादुरी जगदेव बाबू की।

जगदेव बाबू की शोषित क्रांति से पूर्व, त्रिवेणी संघ की स्थापना 30 मई 1933 को हो चुकी थी। मतलब बिहार की तीन जागरुक जातियां : कुर्मी, कोइरी, यादवों को मिलाकर त्रिवेणी संघ की स्थापना हुई। इस त्रिवेणी संघ के संस्थापक सदस्यों में से प्रमुख थे।

1. यदुनंदन लाल मेहता उर्फ सहस्त्रानन, 2. सरदार जयदेव सिंह, 3. दासू सिंह, 4. नव दीप चंद्र घोष, 5. गणपति मंडल, 6. यदुनंदन महतो (गया वाले) , 7. देवगन प्रसाद सिंह , 8. नंद किशोर सिंह , 9. शिवपूजन सिंह

यह सभी नेता कुर्मी, कोईरी और यादव जातियों से ही संबंध रखते थे। परंतु सच्चाई तो यह है, कि त्रिवेणी संघ कहने को तो 3 जातियों का संघ था, किंतु उसमें लगभग सभी मूलनिवासी जातियां शामिल थीं। त्रिवेणी संघ का मिशन, समाज सुधार का मिशन था। आत्म सम्मान प्राप्ति का मिशन था। किंतु बाबू जगदेव का मिशन सामाजिक व्यवस्था

परिवर्तन का मिशन था। जो कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विनाश के लिए था। बहुजन समाज भारत के सर्वहारा समाज में, उनके अंदर वर्ग संघर्ष की धारणा पैदा करने के कारण, तत्कालीन बिहार राज्य के हजारीबाग जिले के पेटरवार स्थान पर, मूलनिवासी बहुजनों के दबंग नेता, लखन लाल महतो ने बाबू जगदेव प्रसाद कुशवाहा को बिहार लेनिन का खिताब दिया। तभी से बाबू जगदेव प्रसाद बिहार लेनिन के नाम से पहचाने जाने लगे। किंतु वास्तव में अगर देखा जाए तो, बाबू जगदेव प्रसाद कुशवाहा सही मायने में बिहार लेनिन नहीं, बल्कि बहुजन लेनिन हैं।

त्रिवेणी संघ द्वारा अछूतों और पिछड़ों में शिक्षा का प्रसार, सामाजिक सुधार, अछूतों के साथ बराबरी का बर्ताव, उन्हें खाट पर बैठाना, शादी विवाह में जयमाला प्रथा की शुरुआत। तथा अछूतों के साथ खानपान, उठक बैठक, बोलचाल में बराबरी का बर्ताव, की शुरुआत की गई। सरदार जयदेव सिंह हमेशा यही कहते :

हीन भावना त्याग दो, यह मत सोचो कि तुम किसी से छोटे हो।

त्रिवेणी संघ ने सामाजिक अत्याचार के खिलाफ आंदोलन छेड़ा। और गांव गांव में सभायें होने लगीं।

पिछड़ों ने अपने नाम के साथ सिंह लगाना शुरू कर दिया। त्रिवेणी संघ के सामाजिक आंदोलन के बाद जिस सामाजिक संगठन अर्जक संघ के गर्भ से शोषित क्रांति का जन्म हुआ था, उस क्रांति ने सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन की दिशा मोड़ दी। लोगों ने अपने शरीर पर जो जनेऊ धारण कर लिए थे अज्ञानताबस, उस जनेऊ के धागे को तोड़ना शुरू कर दिया। सत्यनारायण कथा बंद कराना शुरू कर दिया। विवाह संस्कार को अर्जक विधि से शुरू कर दिया।

धर्म के धंधों को बंद करते ही द्विजातियां बौखला उठीं। उन्होंने जगह-जगह शोषित शांति दूतों पर हमले शुरू कर दिए। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में शोषित नेता रामजीत यादव, गाजीपुर में डॉक्टर बीआर कुरील, बरेली में लोक गायक मस्तराम देहाती पर भी कई बार जानलेवा हमला किया गया। उत्तर प्रदेश और बिहार में जब-जब शंबूक वध नाटक खेला गया, तो द्विजातियों ने सभी जगह पर उपद्रव करने का असफल प्रयास किया। लेकिन तब तक सामाजिक एकता काफी दृढ़ हो चुकी थी।

जगदेव बाबू ने अपने सामाजिक आंदोलन की शुरुआत सामाजिक संगठन अर्जक संघ से की। जिसके सिद्धांत और मूल्य थे : जानो, छानो तब मानो। बहुजन समाज भ्रांति व भय के दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ था। बिहार की धरती पर बहुजन महिलाओं के साथ द्विजातियों द्वारा अनाचार, दुराचार बाबू जगदेव प्रसाद ने देखा। किसान सभा और आर्य समाज की बौद्धिक बदमाशी, डॉ राम मनोहर लोहिया की सप्तक्रांति, जयप्रकाश नारायण की उभरती संपूर्ण क्रांति, जगदेव बाबू को संपूर्ण भ्रांति नजर आ रही थी। जगदेव बाबू ने कहा :

कहा जाता है कि शोषितों की दुरावस्था का कारण उनकी आर्थिक गरीबी है, जिसके दूर होते ही उनकी सारी कठिनाइयां दूर हो जाएंगी। थोड़े समय के लिए यह बात मान भी ली जा सकती है। पर क्या उनके सामने केवल उनकी आर्थिक गरीबी ही है या कुछ और भी है? क्या उन्हें शोषितों की ओर से उचित सामाजिक सम्मान मिलता है? क्या सौ 100-100 वर्षों के शोषितों को, ऊंची जाति के 10 वर्ष के छोटे बच्चे भी, अरे, अहो, कहकर पुकारते नहीं है क्या? वे बच्चे उन्हें नमस्ते प्रणाम करते हैं? उसमें उनकी कौन सी पूंजी लगती है? पर नहीं उनका संस्कार ही कुछ ऐसा बन गया है, कि वह शोषितों का सम्मान हरगिज़ नहीं कर सकते। चाहे वे कितने ही बड़े क्यों न हों। संविधान में तो किसी को छोटा बड़ा नहीं माना गया है, क्या संविधान की मूल भावना धरती पर उतर सकी है।

आर्य ब्राह्मणी व्यवस्था में ब्राह्मण और क्षत्रिय के बीच की खाई यदि 90 फीट गहरी है। तो फिर अन्य वर्णों की बीच की खाई का अंदाजा लगाया जा सकता है। जब खुसरूपुर बाजार की मूलनिवासी बहुजन जातियों ने अपने यहां सड़क की सुविधा न होने का सवाल जगदेव बाबू के सामने उठाया। तो जगदेव बाबू ने अपने संबोधन में कहा :

यहां की बहुसंख्यक जनता शोषित वर्ग की है। जिसमें तेली-बनियों की संख्या सर्वाधिक है, पर यह तो खुद इतने गिरे हुए हैं, कि इनका स्वाभिमान बिल्कुल मर चुका है। जिन तेलियों का छुआ हुआ पानी ऊंची जाति के लोग नहीं पीते। उन्हीं द्विजातियों के पोषक चिराग में यदि एक तेल डालते जाएंगे, तो वह चिराग एक दिन इनका घर जला डालेंगे। पर जैसे इनके कोल्हू में जूते बैलों के आंखों पर पट्टियां बंधी रहती हैं, वैसे ही इनकी आंखों पर भी बंधी हुई हैं।

जिस प्रकार कुत्ता कभी मांस की रखवाली नहीं कर सकता। उसी तरह देश के सामंत, ऊंची जातियों एवं पूंजीपति वर्ग शोषितों का हिस्सा नहीं दे सकते। इसलिए उनके नेतृत्व की जगह, दबे कुचले शोषितों का नेतृत्व विकसित करना है। भारत में जब तक सामाजिक क्रांति नहीं होगी, तब तक आर्थिक क्रांति हो ही नहीं सकती। इस सच्चाई को जो स्वीकार नहीं करता है, वो अव्वल दर्जे का फरेबी, चंपडूक और मक्कार है। ईश्वर, देवता, पूजा पाठ, भाग्य, नक्षत्र, धर्म, यह सब शोषितों को गुलाम बनाए रखने के लिए द्विजों के हथियार हैं। हम जिनके लिए बोलते हैं, वह गूंगे और बहरे हैं।

बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर ही ऐसे व्यक्ति थे, जो डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के आंतरिक और बाह्य स्वरूप को पहचानते थे। 25 अप्रैल 1948 के बेगम हजरत महल पार्क लखनऊ में दिए गए भाषण के अंशों को देखा जा सकता है।

डॉक्टर लोहिया के आकर्षण में जगदेव बाबू उस समय आए, जब उन्होंने अधिकार वंचित पिछड़ों के लिए सत्ता से लेकर शासन-प्रशासन में 60% भागीदारी देने की घोषणा की। डॉ लोहिया ने नारा दिया :

संसोपा ने बांधी गांठ।
100 में पावें पिछड़े साठ।।

पिछड़ा कौन? ब्राह्मणी सामाजिक व्यवस्था के शुद्र, अतिशुद्र तथा सारी की सारी महिलाएं।

डॉ राम मनोहर लोहिया के अंतर्मन को बाबू जगदेव प्रसाद 1967 के लोकसभा और विधानसभा के टिकट बंटवारे को लेकर ही समझ पाए। बिहार विधानसभा के चुनाव में 40% कोटे में बसावन सिंह भूमिहार ने विधानसभा का टिकट प्राप्त कर और विधान परिषद का टिकट उनकी पत्नी कमला सिन्हा 60% के कोटे से प्राप्त कर लिया। इस प्रकार पति पत्नी ने मिलकर 100% कब्जा कर लिया। संसद के चुनाव में भी लोकसभा का टिकट 40% के कोटे से अर्जुन सिंह भदौरिया एमपी बनाए गए और उनकी पत्नी सरला भदौरिया 60% कोटे में राज्यसभा का टिकट प्राप्त कर संसद पहुंच गईं। केंद्र में भी पति-पत्नी ने 100% हिस्सा प्राप्त कर लिया। अछूत, पिछड़े और मुसलमानों मुंह ताकते रह गए। इसी तरह बिहार मंत्रिमंडल में 40% मंत्री पिछड़े वर्ग के बने और 60% मंत्री उच्च वर्ग के यानी सवर्ण।

जगदेव बाबू का विद्रोही मन विद्रोह कर बैठा। क्योंकि बिहार की संविद सरकार में अछूत, आदिवासी और मुसलमानों के बीच से एक भी मंत्री नहीं बनाया गया। जगदेव बाबू ने डॉक्टर लोहिया से मुलाकात की, तथा उनका उस सिद्धांत हीनता की ओर ध्यान आकर्षित किया। और कहा, कि जब सवर्ण समाज के ही पति-पत्नी 40/60 की सीटों पर काबिज होंगे तो फिर अछूत, पिछड़े, आदिवासी, मुसलमान, आपकी पार्टी का झंडा क्यों ढोएंगें। डॉक्टर लोहिया ने चुप्पी साध ली। बाबू जगदेव प्रसाद ने बिना विलंब के संसोपा से इस्तीफा दे दिया। 25 अगस्त 1967 को पटना के अंजुमन इस्लामिया हॉल में, देश के तमाम अछूतों, आदिवासियों, पिछड़ों और मुसलमानों का कार्यकर्ता सम्मेलन करके "शोषित दल" नामक दल का गठन किया और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा :

ऊंची जाति वालों ने हमारे बाप दादों से हलवाही करवाई है। मैं उसकी राजनीतिक हलवाही करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। मैं तमाम काले-कलूटे, निराद्रित-दरिद्र, फटेहाल, बेहाल, मजलूमों और मशरूमों को निश्चित नीति और सिद्धांत के तहत एक मंच पर एकत्रित करुंगा और ऐसे ही लोगों के बीच से नेतृत्व खड़ा करके दिल्ली की गद्दी पर बैठाउंगा, जो धन-दौलत, नौकरी-व्यापार, कल-कारखाने का बंटवारा स्वयं करेंगे। हमारी लड़ाई 100 साल की होगी, जिसमें :

पहली पीढ़ी के लोग मारे जाएंगें।
दूसरी पीढ़ी के लोग जेल जाएंगे।।
और तीसरी पीढ़ी के लोग राज करेंगे।।।
विजय अंततोगत्वा हमारी ही होगी।

7 अगस्त 1972 को शोषित समाज दल की स्थापना हुई और यही से शोषित क्रांति का डंका बजा। 23, 24, 25 फरवरी 1973 को शोषित समाज दल का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन, डेहरी आन सोन, डालमियानगर(बिहार) में हुआ। जिसमें माननीय रामस्वरूप वर्मा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष, बाबू जगदेव प्रसाद दल के महामंत्री तथा रामाश्चर्य यादव दल के संगठन मंत्री सर्वसम्मति से चुने गए। जगदेव बाबू ने घोषणा की, कि हमारा दल 90 सैकड़ा शोषितों (अछूत, आदिवासी मुसलमान और पिछड़ी जातियों) का निछक्का दल है। हमारे दल का उद्देश है : शोषितों का राज, शोषितों के द्वारा, शोषितों के लिए। हमारा नारा है :

दस का शासन नब्बे पर, नहीं चलेगा नहीं चलेगा।
सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग हमारा है।।

झंडे का 90% भाग काला अर्थात सिंधुघाटी के नागवंशी लोग, जिनका द्विजातियों ने खून चूस कर काला बना दिया। और 10% भाग लाल शासकों का, जो मूलनिवासी बहुजनों का खून चूसकर लाल हुए। जनसंघ कट्टर पूंजीवादी, जबकि कांग्रेसी उदार पूंजीवादी, जो समाजवाद का सब्जबाग दिखाकर पूंजीवाद का हित साधन करता था। समाजवाद के खोखले नारों से गरीबों को छलता था और पूंजीपतियों का भला करता था। तीसरा खेमा समाजवादियों का था। जगदेव बाबू ने डॉक्टर लोहिया को चुना, किंतु जब उन्होंने देखा कि लोहिया की सप्तकांति उन्हीं के कारनामों से दफन हो रही है। तो जगदेव बाबू ने शोषित क्रांति को जन्म दिया। जिसकी भनक विदेशों तक पहुंच चुकी थी।

जगदेव बाबू के अनुसार 24 फरवरी 1969 के सुबह 5:15 बजे में दिल्ली से पालम हवाई अड्डे पर पटना आने के लिए पहुंचा। हवाई जहाज में बैठने का इंतजार कर रहा था, मेरी बगल में एक परदेसी आकर खड़ा हो गया। मुझको ऊपर से नीचे तक गौर से देखने के बाद उन्होंने पूछा, आप कहां जाएंगे। मैंने कहा पटना। उसने कहा आप कौन हैं। मैंने अपना नाम बताया और यह भी बताया कि मैं शोषित दल का एक सदस्य हूं। बातें अंग्रेजी में हो रही थीं। उन्होंने कहा, मैं आपकी बगल की सीट पर बैठकर आपके साथ हवाई यात्रा करना चाहता हूं। मैंने उनकी इच्छा पर प्रसन्नता व्यक्त की। इतने में हवाई जहाज में हम एक दूसरे के बगल में बैठ गए। हवाई जहाज ने उड़ान भरी। मैंने अपने अनजान दोस्त से पूछा, आप कौन हैं और पटना क्यों जा रहे हैं। उन्होंने अपना नाम पाल गार्ड लिबिन बताया। और कहा कि मैं रूसी और पूर्वी अध्ययन संस्थान मास्को में इतिहास का प्राध्यापक हूं। उन्होंने यह भी बताया, कि मैं मध्यावधि चुनाव पर अध्ययन करने के लिए बिहार आ रहा हूं। दोनों में हुई आपस में बातचीत :

लेबिन : आप कम्युनिस्ट क्यों नहीं है?

जगदेव : इसमें सभी ऊंची जाति के लोग हैं। और करोड़पति हैं। यह सब शोषण के विज्ञान और कला में प्रवीण हैं। 10% ऊंची जातियों को हम काला साम्राज्य मानते हैं। ऊंची जाति के 10 शिक्षकों ने 90% शोषितों को आज तक गुलाम बना कर रखा है। सभी राजनीतिक दलों पर इनका कब्जा है। अगर मार्क्स और लेनिन भारत में पैदा होते, तो यहां की ऊंची

जातियों को शोषक वर्ग और सम्राज्यवादी करार देते। शोषित समाज के जो कुछ लोग हैं, उनको भी ऊंची जाति वाले दबोचे हुए हैं।

ब्रह्मणवादी ताकते बौखला उठीं थीं। तथा उन्होंने जगदेव प्रसाद को धमकियां देना शुरू कर दिया था। जबकि निर्भीक और निडर जगदेव प्रसाद पहले ही घोषणा कर चुके थे। वीर कभी खाट पर नहीं मरते, उनकी मौत गोली और तलवार से होती है। मौत सूरमाओं की दुल्हन है, जिन्हें गले लगाने के लिए वे बेताब होते हैं।

वोट के संवैधानिक अधिकार के प्रयोग पर उन्होंने बहुजनों को चौकस रहने के लिए संदेश दिया। अपने बहुमूल्य वोट को खूब सोच विचार कर उसी उम्मीदवार के पक्ष में डालना है। जो हमारा, हमारे वर्ग का हितेषी हो। चुनाव के दिन मतदान शुरू होने के निश्चित समय से पहले पंक्ति में लगकर मतदान करना है। बिना मतदान किए और कोई दूसरा काम नहीं करना है। बिना वोट डाले भोजन नहीं करना है। हां, इस मतदान कार्य में अगर कोई बाधक बने, कोई वोट डालने से रोके, कोई बूथ लुटेरा बनकर बलपूर्वक हमारा वोट डालना चाहे, तो मरने मारने पर उतारू हो जाना है। दुनिया के गरीबों के सबसे बड़े दार्शनिक मार्क्स ने कहा: जब शोषण चरम सीमा पर पहुंच जाता है, तब वह इंकलाब में परिणित हो जाता है।

महिला सभा को संबोधित करते हुए जगदेव बाबू ने कहा :

श्रद्धेय माताओं और प्यारी बहनों! मानव जीवन की गाड़ी को सफलतापूर्वक चलाने के लिए नर-नारी दोनों पहिये के समान हैं। नारी रूपी एक पहिया कमजोर होने पर, जीवन की गाड़ी की गति बिगड़ जाती है। नारी मानव जीवन का आधा अंग होती है। अतः जीवन के हर क्षेत्र में उसकी भागीदारी अनिवार्य है। तभी समाज सही ढंग से उन्नति कर सकता है। आज शोषित समाज की महिलाएं बाहय आडंबर एवं रुढ़वादी विचारों और मान्यताओं से ग्रसित हैं। अज्ञानता के कारण वह बहुत सी रूढ़िवादी परंपराओं के पालन में, व्यर्थ समय, श्रम और धन का अपव्यय करती हैं। इसलिए महिलाओं को जागृत होने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है। अशिक्षित होने के कारण ही हर वर्ग की नारियां सबसे ज्यादा शोषण का शिकार होती हैं। अतः समतामूलक समाज की स्थापना के लिए, शिक्षित होने के साथ-साथ नारियों को राजनीति में आना भी अत्यंत आवश्यक है।

राजनीतिक आंदोलन में मुसलमानों की भागीदारी पर भागीदारी पर बोलते हुए :

भारत में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है, जब किसी मुसलमान ने भारत का सौदा विदेशियों के साथ किया हो। पाकिस्तान के साथ भारत की लड़ाई में कश्मीर मोर्चे पर कर्नल उस्मान और अब्दुल हमीद की बहादुरी और वफादारी को इस मुल्क का कोई गद्दार ही भूल सकता है।

जगदेव बाबू के चरित्र निर्माण में कबीर और रैदास के विचार समाहित थे। रैदास ने संदेश दिया था :

रैदास सत्य का आसरा, सत्य सदा सुख पाये।
सत्य कबहुं नहीं छांड़िए, जग जाये तो जाये।।

बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर ने कहा : धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं। जगदेव बाबू का ऐसे किसी धर्म से कोई संबंध नहीं था, जिसमें अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार, भाग्यवाद, पुनर्जन्म, आत्मा, परमात्मा, जाति एवं वर्ण का प्रावधान हो। उनकी धार्मिक धारणा में, समता, ममता, करुणा और मैत्री के सिवा कुछ भी नहीं था।

तथागत बुद्ध ने बहुजनों के हित और सुख के लिए वैदिक व्यवस्था को नकारते हुए, समता, ममता, करूणा और मैत्री का संदेश दिया। फलत: इसी धारणा ने बौद्ध धर्म को विश्व धर्म बना दिया। इसी धारणा के बल पर मौर्य सम्राट अशोक ने भारत को एक विशाल राष्ट्र के रूप में, विश्व में प्रस्थापित किया।

जगदेव बाबू का धार्मिक दर्शन मानव कल्याण पर आधारित था। भीख मांगने में भी स्वाभिमान का अनुभव करने वाला वर्ग, आज भारत में समाज का अग्रणी होने का दावा करता है। और जो कठिन शारीरिक परिश्रम करते हैं, उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। नहीं तो भंगी कैसे न छूने योग्य, और द्विज कैसे पूज्य बन गया। भंगी के अभाव में तो सड़ांध और गंदगी की घुटन से व्यापक विनाश हो सकता है। किंतु द्विजों के अभाव में समाज का कुछ भी नहीं बिगड़ता।

जगदेव बाबू ने अर्जक संघ द्वारा प्रतिपादित विचार, आचार, संस्कार और त्योहारों को स्वीकार किया। उनके धार्मिक दर्शन में अभिवादन से लेकर जन्म एवं मृत्यु तक के जितने भी संस्कार तय किए, उनमें अत्त दीपो भव की नीति थी। जिसमें किसी पुरोहित की आवश्यकता नहीं होती है।

जगदेव बाबू ने अपने सामाजिक जीवन में आर्थिक बदहाली का जीवन जिया। फिर भी उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी, अपने हौसले को हमेशा बुलंद रखा। उनका संदेश था :

गुल से हौसला सीखो गम में मुस्कुराने का।
फूल कैद है कांटो में फिर भी मुस्कुराता है।।

वे आर्थिक समानता के पक्षधर थे। उन्होंने नारा दिया था :

जो जमीन को जोते बोवे।
वहीं जमीन का मालिक होवे।।

अमेरिका में टेक्सास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर टांमसन अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे। प्रोफेसर टांमसन 31 जुलाई 1970 को शोषित नेता जगदेव बाबू से साक्षात्कार के लिए आए थे। दोनों में लगभग ढाई घंटे आर्थिक मुद्दे पर सवाल जवाब हुए :

प्रोफेसर टॉमसन : वह कौन सी एक समस्या है, जिसका समाधान होने पर भारत में आर्थिक क्रांति सफल हो सकती है। और आर्थिक क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर हो सकता है।

जगदेव बाबू : राजनीति और नौकरशाही पर से 10% शोषक वर्ग के एकाधिकार और प्रभुत्व का खात्मा। ऊंची जातियों की दौलत को शोषितों में बांटना जरूरी है।

प्रोफेसर टामसन : अगर आपको भारत का प्रधानमंत्री बना दिया जाए, तो सामाजिक और आर्थिक क्रांति के लिए कौन सा कार्यक्रम सबसे पहले कार्यान्वित करेंगे।

जगदेव बाबू : सरकारी गैर सरकारी और अर्ध सरकारी नौकरियों में 90 सैकड़ा शोषितों के लिए 90 सैकड़ा जगह सुरक्षित कर दूंगा। उससे नौकरशाही पर हमारा कब्जा हो जाएगा। और जिन राजनीतिक दलों के नेतृत्व में 10% से ज्यादा ऊंची जाति के लोग रहेंगे, उन राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा देंगे।

कमायें धोती वाले, खायें टोपी वाले, ऐसा हम नहीं चलने देंगे। आप जिस भी प्रकार के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं, जब पूंजीपति शोषक गाली दें तो समझो, आप सही राह पर हो। और यदि वे तुम्हारी प्रशंसा करें तो समझो, तुम गलत राह पर हो।

जगदेव बाबू के राजनीतिक संगठन शोषित समाज दल ने लोकतांत्रिक ढंग से प्रस्ताव पास किया जिनमें मुख्य हैं :

1. समान्य कोटे से चुने गए अभ्यर्थी अनुसूचित जाति एवं जनजाति कोटे में ना जोड़ें जाएं।
2. सामान्य कोटे में चुने गए अनुसूचित जाति एवं जनजाति के अभ्यर्थियों को छोड़कर, उक्त वर्ग के शेष अभ्यर्थियों में से ही कोटे को पूरा करने के लिए अभ्यर्थी चुने जाएं।
3. आरक्षित कोटे से चुने जाने वाले अभ्यर्थियों का साक्षात्कार केवल अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों के अधिकारी ही करें।
4. प्रोन्नति में भी उपर्युक्त सिद्धांत लागू किया जायं।
5. भारतीय संविधान विरोधी साहित्य जप्त किए जाएं।
6. डा. अंबेडकर द्वारा लिखित सहित्य देश के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी पुस्तकालयों में रखे जाएं।
7. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों को मनपसंद उम्मीदवार चुनने का अधिकार मिले।
8. सामाजिक एवं शैक्षणिक आधार पर अन्य पिछड़ी जाति को उनकी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाए।
9. शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं एकता कायम करना हो।
10. आठवीं तक की शिक्षा अनिवार्य और सारी शिक्षा मुफ्त मुक्त हो।
11. शिक्षालयों में परस्पर समानता का व्यवहार और आचरण करना अनिवार्य हो। यानी बोलने-चालने, उठने-बैठने, और खानपान में सभी परस्पर समता बरतें।

बाबू जगदेव प्रसाद के क्रोध में करूणा थी कटुता नहीं। वे राष्ट्र को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। उन्होंने राजनीतिक नैतिकता पर प्रश्न खड़ा करते हुए कहा :

आज राजनीति में पिछड़ा वर्ग की बड़ी धूम मची है। लेकिन विचारधारा के स्तर पर इसके तमाम नेता खाली हैं। कोई शीतला माई मंदिर में माथा पटक रहा है। तो कोई विंध्याचल और वैष्णो देवी की मनौती पूरी कर रहा है। ऐसे नेताओं से पिछड़ों का कभी भला होने वाला नहीं है। वे सत्ता के लोभी लोग हैं, जिन्हें एक दिन इतिहास के कूड़ेदान में जाना है। बाबासाहेब डॉक्टर आंबेडकर लगातार चुनाव हारते रहे, और जगजीवनराम लगातार चुनाव जीतते रहे। लेकिन डॉक्टर अंबेडकर की एक सुचिंतित विचारधारा थी। जबकि जगजीवन राम

पिछलग्गू राजनीति कर रहे थे। इतिहास ने आंबेडकर को चुन लिया और जगजीवन राम को खारिज कर दिया है।

सवालों से घिरी शहादत :

शोषित समाज दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में यह पास हुआ, कि 5 सितंबर 1974 को 7 मांगों को लेकर प्रदेश व्यापी सत्याग्रह का कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। जो निम्न था :

1. अनिवार्य और समान शिक्षा लागू करो।
2. डा. अंबेडकर का सारा सहित्य प्रदेश के सभी sc-st छात्रावासों/पुस्तकालयों में रखो।
3. भ्रष्टाचार, बेकारी और महंगाई दूर करो तथा सभी मतदाताओं को फोटो वाला परिचय पत्र देकर मतदान अनिवार्य घोषित करो।
4. सामाजिक और शैक्षणिक आधार पर पिछड़े वर्गों को जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण दो तथा अनुसूचित जाति, जनजाति के स्थान को सुरक्षित रखकर साल के साल भरो।
5. प्रदेश के भूमिहीनों या 1 एकड़ तक भूमिवाले sc-st को 5 साल के अंदर, सरकारी वनभूमि में इंसानी बस्ती बसाकर, रोजगार की गारंटी देकर, स्वाबलंबी तथा स्वाभिमानी बनाओ।
6. किसानों के लिए 7 वर्ष के अंदर सिंचाई का प्रबंध करो।
7. खेत मजदूरी अधिनियम और बटाईदारी बिल लागू करो।

5 मई 1974 को जहानाबाद के कुर्था ब्लॉक में सत्याग्रह में भाग लेना था। उनके भाग लेने से पूर्व ही द्विजातियों ने उनको जान से मारने के सारे ताने-बाने बुन लिए थे। जिसकी भनक कुछ लोगों को लग चुकी थी। 5 सितंबर को प्रातः जब जगदेव बाबू सत्याग्रह स्थल पर पहुंचने के लिए निकले। तो उनका सहपाठी मित्र छोटन शाही, ग्राम धर्मपुर, जो भूमिहार जाति से संबंध रखता था, वह रास्ते में मिला और उसने कहा, कि आप सत्याग्रह में भाग न लें। आज आपके ऊपर बहुत बड़ा खतरा है। जगदेव बाबू ने उसे जवाब देते हुए कहा, कि हमने ही सत्याग्रह का आवाहन किया है, और हम ही नहीं जाएंगे यह कैसे हो सकता है। अब परिणाम चाहे जो भी हो, मैं वहाँ जाऊंगा अवश्य।

हमने उन तुंद हवाओं में जलाये हैं चराग।
जिन हवाओं ने उलट दी हैं बसाते अक्सर।।

उनके कुछ साथियों ने भी उनको खतरे की बात से अवगत कराया, किंतु उनके जमीर ने उन्हें पुनः झकझोरा :

वक्त के साथ बदलना तो बहुत आता है।
मगर मुझसे हर वक्त मुखातिब है गैरत मेरी।।

अंततः जगदेव बाबू कुर्था ब्लॉक पर पहुंच ही गये। मूलनिवासी बहुजन समाज के लोगों ने उन्हें मालाओं से ढक दिया। जगदेव बाबू जिंदाबाद, जगदेव बाबू जिंदाबाद.. के नारों से सारा प्रांगण गूंज उठा। जगदेव बाबू मंच पर चढ़े और संबोधित करते हुए कहा :

आज हम लोग शांतिपूर्ण ढंग से, शोषितों के हक के मांग के समर्थन में, सत्याग्रह करने के लिए यहां आए हैं। मैं सरकार और नौकरशाहों से अपील करना चाहता हूं। कि जिसप्रकार से एक परिवार की संपत्ति और सुख-सुविधा पर परिवार के सारे सदस्यों का अधिकार होता है। और अगर 10 सदस्यों वाले परिवार का एक सदस्य, 9 सदस्यों की संपत्ति और सुख सुविधा को हड़प कर अकेले उपभोग करे, तो न यह न्याय संगत होगा, और न ही उस परिवार के विकास के लिए उचित होगा। उसीप्रकार अगर देश के 10% लोग, समग्र पदों और सुख सुविधाओं को हथिया लें, तो देश कभी भी सही ढंग से तरक्की नहीं कर सकता। दूसरी बात यह है कि, अगर ऋतु के समाप्त होने के बाद कोई वृक्ष मोहवश, फलों को अपनी डालियों से चिपकाए रखना चाहे, तो फल तो सड़ेगे ही। गालियां भी सड़ जाएंगी। और वृक्ष का विनाश हो जाएगा। उसी प्रकार समय रहते अगर सामंतों और शासकों ने, बहुजनो को उनके अधिकार नहीं दिये, तो समय का चक्र बहुजनों को, उनका अधिकार देने के लिए उन्हें बाध्य कर देगा। क्योंकि परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है।

ठांय - ठांय : जगदेव बाबू का मंच पर भाषण चल ही रहा था, कि भीड़ में भगदड़ हो गयी। पूर्व नियोजित योजना के तहत गोली जगदेव बाबू के गर्दन पर लगी। दूसरी गोली 12 वर्षीय कक्षा 7 के बालक लखन पासी के बेटे लक्ष्मण चौधरी को लगी। जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। जगदेव बाबू जमीन पर गिर पड़े। गोली लगते ही कृष्णा प्रसाद दिवाकर, गणेश सिंह, बसंत सिंह, रामस्वरूप सिंह ने तुरंत जगदेव बाबू को अपनी जीप में उठा कर रखा। जगदेव बाबू ने पानी मांगा। यशकाई सुक्कन रजक की 55 वर्षीय पत्नी मुंद्रा देवी, ज्यों ही पानी लेकर जीप के पास पहुंची, पुलिस ने पानी का गिलास फेंक दिया। जगदेव बाबू को जीप से निकालकर, पैर पकड़कर जमीन पर घसीटते हुए, पुलिस अपनी जीप में रखकर थाने ले

गयी। जहां प्रत्यक्षदर्शी स्थानीय चौकीदार नौरंगी राम, जो कुरहारी का रहने ही ही रहने वाला था। जो थाने के अंदर था, ने बयान दिया :

"मैं आवाक् था, पुलिस जगदेव बाबू को बंदूक के कुंदे से पीट रही थी। और अपशब्द के साथ व्यंग भी करती जाती थी। बूट पहने छाती और पेट पर चढ़ चढ़ जाती थी। पुलिस मुझे बाहर भी नहीं जाने दे रही थी, कि मैं बाहर जाकर जनता को पुलिस के अत्याचार की कहानी बताऊं।"

जब पुलिस ने जगदेव बाबू को जीप से छीन लिया, तो निहत्थे साथी जीप लेकर करपी गए। जहां उनकी पत्नी सत्यरंजना देवी धरना कार्यक्रम का नेतृत्व कर रही थीं। घटना की जानकारी मिलते ही सत्यरंजना देवी पुत्र नागमणि के साथ जीभ से कुर्था के लिए रवाना हो गयीं। वह नागमणि के साथ सीधे थाने पहुंचीं। किंतु पुलिस ने गेट से आगे नहीं जाने दिया। पुलिस वालों ने नागमणि को चकमा दिया, कि जगदेव बाबू जिंदा हैं, उन्हें इलाज के लिए गया भेज दिया है। अगर आप लोगों को मिलना है, तो पुलिस वैन आई हुई है उसी से गया चले जाइए।

इधर जनता में आक्रोश बढ़ता जा रहा था। पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर, राम लखन सिंह यादव, बी.पी. मंडल, राम लखन चंदा पुरी के दबाव और जनता के आक्रोश को बढ़ता देख, अंततः पुलिस ने जगदेव बाबू की लाश सौंप दी। जगदेव बाबू का शव देखते ही, पत्नी सत्यरंजना देवी पछाड़ खाकर गिर पड़ी। अनुज वीरेंद्र कटे पक्षी की तरह छटपटा रहे थे। माता रासकली की आंखें शून्य की ओर निहार रही थीं....

आज भी सबसे अहम सवाल जो है, उसका उत्तर आमतौर पर शोषित समाज के लोग जानना चाहते हैं। कि आखिर जगदेव बाबू का गुनाह क्या था? किस वजह से उन्हें मौत के घाट उतारा गया।

क्या उनका गुनाह यही तो नहीं था, कि उन्होंने एलान कर कहा, कि जो सामाजिक ढांचा है, वो बेढंगा है। उसमें केवल विषमता ही नहीं, श्रम को सम्मान भी नहीं है।

यशकायी डी. के. खापर्डे के अनुसार : शासक पार्टियां बदल जाती हैं, लेकिन शासन जातियां नहीं बदलतीं।

समाप्त

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : दयाराम (शोधकर्ता)
सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक 05.09. 2020

अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 73551 75480